International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भिवानी जिले की भौगोलिक स्थिति के कारण जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन
(वर्ष 1981 से 2022 तक)

शोधार्थी
सुरेश कुमार
(भूगोल विभाग)

शोध निर्देशक
डॉ. राजू शर्मा
(भूगोल विभाग)

शोध केन्द्र : श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

लेख सार : शोधार्थी द्वारा इस शोध में भी भिवानी जिले की जनसंख्या एवं जनसंख्या सम्बन्धी समस्याओं का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा तथा भविष्य में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु उपाय सुझाए जाएगें। जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण में सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण उपाय हैं, बढ़ती जनसंख्या को नियन्त्रित करना ताकि जनसंख्या स्थिर होने पर विकास को गति मिल सके। अतः जनसंख्या वृद्धि के नियन्त्रण के उपाय एवं वर्तमान जनसंख्या हेतु जीविकोपार्जन के संसाधन उपलब्ध कराने के उपाय भी इस शोध में प्रस्तुत किए जाएगा।

लेख शब्द : जनसंख्या, विश्लेषण, गत्यात्यमकता, औद्योगिकीकरण, नगरीयकरण, संतुलन, वृद्धि, वितरण, गुणवत्ता, तुलनात्मक अध्ययन ।

1. प्रस्तावना : मानव संसाधन अर्थात् जनसंख्या ही किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश की आर्थिक संरचना एवं प्रादेशिक विकास को समझने का केन्द्र बिन्दु है। जनसंख्या वृद्धि, वितरण, संरचना एवं साक्षरता आदि के अध्ययन से प्रदेश के वर्तमान एवं भावी विकास के लिए योजना तैयार की जाती है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राचीन काल से ही मानव द्वारा क्षेत्र विशेष के मानव संसाधन के स्तर का अध्ययन किया जाता रहा है। आधुनिक काल में इस महत्वपूर्ण विषय का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन ट्रिवार्था, जेलिंस्की आदि विद्वानों द्वारा किया गया है। पिछले कुछ दशकों से विश्व की जनसंख्या में अचानक वृद्धि हुई है। 1901 में विश्व की जनसंख्या 1 अरब के आस–पास थी जो सन् 2000 में बढ़कर लगभग 6 अरब को पार कर चुकी है। जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' की संज्ञा दे सकते है। वर्तमान में विश्व की जनसंख्या 7 बिलियन के आँकड़ें को भी पार कर चुकी है। इस विस्फोटक वृद्धि ने वैज्ञानिकों, चिंतकों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी इस ज्वलंत विषय पर सोचने को विवश कर दिया हैं।

भारत भी जनसंख्या की तीव्र वृद्धि सम्बन्धी समस्या से ग्रस्त है, भारत जनसंख्या की वृद्धि से विश्व का दूसरा बड़ा देश है। विश्व की जनसंख्या वर्तमान लगभग 760 करोड को पार चुकी है। संसार के चार देशों चीन, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश में ही संसार की लगभग 45 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है तथा यह देश ही जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं से सबसे अधिक संघर्ष कर रहे है। भारत की जनसंख्या 1901 में लगभग 15 करोड़ थी जो आजादी के समय लगभग 30 करोड़ और 2011 में भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ से अधिक है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या 1 अरब 40 करोड़ से अधिक है। जनसंख्या की अधिकता ने देश के विकास को अवरुद्ध सा कर दिया है जिसके कारण भारत भी इसको नियंत्रित करने के लिए अनेक सरकारी व गैरसरकारी संस्थायें विद्वानों, वैज्ञानिकों, समाज सेवकों तथा दार्शनीकों द्वारा इसको नियंत्रित करने हेतु विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं। भारत में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति अत्यधिक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भयावह है। जिसने अनेक समस्याओं को भी अवरुद्ध किया है। जनसंख्या सम्बन्धी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय पर शोध व अनुसंधान कार्य करने का प्रयास किया जाएगा। जिसके अन्तर्गत राजस्थान के हरियाणा राज्य के भिवानी जिले में मानव संसाधन के विकास स्तर में जनसंख्या के विभिन्न आयामों का अध्ययन वैज्ञानिक पक्ष के साथ विश्लेषण के रूप में किया जायेगा। देश तथा प्रदेश के समान ही भिवानी जिला भी इस समस्या से अछुता नहीं है। जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती वृद्धि के कारण इस क्षेत्र का विकास काफी धीमी गति से हो रहा है।

जनसंख्या की वृद्धि निर्धनता, बेरोजगारी, आवास की समस्या, कुपोषण, चिकित्सा सुविधाओं पर दबाव तथा कृषि पर भार के रूप में भी देखा जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरण के विभिन्न घटकों पर गंभीर प्रभाव देखने में आये हैं जिससे कई आर्थिक, सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। आर्थिक विकास में अवरोध, पर्यावरण प्रदूषण तथा अन्य पर्यावरणीय समस्यायें, ऊर्जा संकट, औद्योगिकी–करण एवं नगरीकरण, यातायात की समस्यायें, रोजगार की समस्यायें आदि जनसंख्या के लगातार वृद्धि के ही दुष्परिणाम हैं। जनसंख्या दबाव के कारण कृषि के लिए भूमि कम हो रही है क्योंकि उनके आवास, सार्वजनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने से लगातार भूमि कम हो रही है। इसके स्वाभाविक परिणाम होंगे खाद्यान्न और पेयजल की उपलब्धता में कमी। इससे समाज के बहुत बड़े वर्ग को स्वास्थ्य और शिक्षा से वंचित रहना पड़ सकता है। परिवार नियोजन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए विवाह निर्धारण अधिनियम का कठोरता से पालन करना, जनसंख्या नियंत्रण के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा प्रणाली में इसे सम्मिलित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साधनों का विस्तार तथा महिलाओं को व्यापक स्तर पर शिक्षित किया जाना जैसे उपाय कारगर हो सकते हैं। यह तभी संभव है जब क्षेत्र का प्रत्येक व्यक्ति जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम को समय रहते समझे तथा जागरूक रहते हुए इस गंभीर चुनौती से निपटने में अपना योगदान सुनिश्चित करें।

अतः जनसंख्या सम्बंधी समस्याओं को दूर करने के लिए जनसंख्या अध्ययन की गहरी आवश्यकता है। ज्ञातव्य है कि विश्व कि जनसख्या में लगातार तीव्र गति से वृद्धि हो रही है और यह जनसंख्या विस्फोट का रूप धारण करती जा रही है जिसके परिणाम स्वरूप बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में मानव को उसकी मूलभूत आवश्यकताऐं जैसे भोजन, आवास, वस्त्र, रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा आदि भी उपलब्ध नही हो पा रही है तथा मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार नही हो पा रहा है। जो कि एक चिन्ताजनक व ज्वलन्त विषय है तथा इस समस्या ने विश्व के वैज्ञानिको, चिन्तकों, बुद्धिजीवियों और साधारण मनुष्यों का भी ध्यान आकृष्ट किया है।

हरियाणा राज्य के भिवानी जिले में उद्योग, जल संसाधन, मृदा संसाधन, खनिज संसाधन, शक्ति संसाधन, परिवहन, आदि की उपलब्धता अपेक्षाकृत सीमित है जबकि जनसंख्या वृद्धि अनवरत हो रही है, जिससे राज्य में जनसंख्या विस्फोट से उत्पन्न समस्याएँ अधिक प्रभावी है। भिवानी जिले के विकास में बढ़ती जनसंख्या अवरोधक है। अतः जनसंख्या को जीविकोपार्जन हेतु विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराना एक विकट समस्या है, क्योंकि सुविधाओं के विस्तार और विकास की तुलना में जनसंख्या वृद्धि तीव्र हो रही है, जिससे सरकारी योजनाएँ व प्रयास भी बौने साबित हो रहे है।

भिवानी जिला मानव संसाधन की दृष्टि से एक सम्पन्न जिला है तथा जनसंख्या हेतु विभिन्न संसाधन एवं सुविधाएँ उपलब्ध है, परन्तु राज्य के अन्य साधन सम्पन्न जिलों की तुलना में यहाँ उतना विकास नही हो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पाया है। इस कारण यहाँ के लोगो का सामान्य जीवन स्तर काफी निम्न है। 2001 की जनगणना के आकड़ों के आधार पर जिले की जनसख्या 1425022 हो गई है। इसमे से 758253 पुरूष व 666769 स्त्रियां है।2011 की जनगणना के अनुसार भिवानी जिले की आबादी 1,692910 है। जिले में जनसंख्या घनत्व 341 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर (880 प्रति वर्ग मील) है। 2001–2011 दशक में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 14.32 प्रतिशत थी। यह जनसंख्या जिले के सामाजिक व आर्थिक पिछड़ेपन को दर्शाता है। पिछले कुछ दशकों से जिले की आवश्यकता के सभी क्षेत्रों जैसे कृषि, परिवहन, संचार, निर्माण कार्य, सेवाएँ, सिंचाई, पर्यटन आदि में वृद्धि हुई है साथ ही सामाजिक व आर्थिक कार्यो जैसे– आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन एवं रोजगार आदि भी काफी विकसित हुए है परन्तु बढ़ती जनसंख्या के कारण प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में बहुत कम वृद्धि हुई है, फलस्वरूप जनमानस में निराशा तथा असंतोष बढ़ रहा है। दिनोदिन बढ़ती हुई महँगाई तथा बेरोजगारी का भी प्रभाव बढ़ रहा है साथ ही बेरोजगारी के कारण आपराधिक प्रवृतियां भी बढ रही है। इन समस्याओं के समाधान के लिए एक ओर आर्थिक व सामाजिक विकास आवश्यक है तो दूसरी और बढ़ती हुई जनसंख्या पर अकुंश लगाया जाना भी उतना ही आवश्यक है। अतः जिले में अन्य समस्याओं की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि सबसे बड़ी समस्या है।

जनगणना 2011 के अनुसार भिवानी जिले का कुल जनसंख्या घनत्व 341 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जिले में उपजाऊ भूमि, रोजगार, उद्योग–धन्धे, खनिज–सम्पदा, जल, विद्युत, शक्ति के संसाधन आदि की सीमित उपलब्धता होने से बढ़ती जनसंख्या ने समस्याओ को और अधिक बढ़ा दिया है। जनसंख्या वृद्धि ने जिले में पहले से ही धीमी गति से हो रहे विकास को स्थिर–सा कर दिया है, जिससे पहले से ही पिछड़ेपन की श्रेणी में खड़ा भिवानी जिला ओर अधिक पिछड़ता जा रहा है। यदि लगातार बढ़ती हुई जिले की इस जनसंख्या पर अंकुश नही लगाया गया तो भविष्य में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ ओर अधिक विकराल रूप धारण कर लेंगी। अनियन्त्रित जनसंख्या से भविष्य में प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे बिजली, पानी, सड़क, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार जैसी समस्याएँ बढ़ जायेगी। अतः जिले की जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण आवश्यक है।

जनसंख्या का अध्ययन भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण बिन्दू है। जनसंख्या सम्बन्धित तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा भूगोलवेत्ताओ व विद्वानों में प्राचीनकाल से ही रही है तथा इस विषय पर विभिन्न भूगोलवेत्ताओं एवं विद्वानों द्वारा विभिन्न अध्ययन एवं शोध किए जाते रहे है। जनसंख्या अध्ययन के अन्तर्गत विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या का वितरण एवं वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, जनसंख्या संरचना, जनसंख्या प्रवास, ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या सम्बन्धी समस्याओं आदि का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है एवं जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन कर उनकी अन्य क्षेत्रो से तुलनात्मक विवेचन किया है।

वर्तमान में यह एक ऐसा ज्वलंत विषय है, जिसने समाज के सभी वर्गो का ध्यान आकृष्ट किया हुआ है तथा विश्व भर में इसके प्रति गहन अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि व गत्यात्मकता ने संसार के सभी देशों को झकझोर दिया है। इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं से विकसित, विकासशील, अर्द्धविकासशील, अविकसित सभी देश प्रभावित हो रहे है। आज सभी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोजगारी, निर्धनता, सामाजिक समस्याएँ, अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी, विकास का अवरूद्ध होना, मूल्यवृद्धि आदि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समस्याएँ निरन्तर बाव प्रस्तुत किए है। विभिन्न भूगोलवेत्ता, विद्वान, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएँ, उच्च शिक्षण संस्थाएँ आदि संगोष्ठीयाँ, सेमिनार, कॉन्फ्रेन्स आयोजित कर उनके माध्यम से लेख, शोध–पत्र, वक्तव्य द्वारा जन–मानस को जनसंख्या सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों एवं समस्याओं से अवगत कराने का प्रयास करती है।

वर्तमान में यह विषय एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभर कर सामने आया है अतः इस विषय पर शोध किया जाना आवश्यक है। इसी की महत्ता के संदर्भ में भिवानी जिले में जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन हेतु शोध कार्य के लिए ''भिवानी जिले की भौगोलिक स्थिति के कारण जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन (वर्ष 1981 से 2022 तक)''विषय का चयन किया गया है।

2. साहित्य की समीक्षा :

अनिल चारण और नवीत धावन (2007), अनिल चारण और नवीत धावन (2007) का जनसंख्या वृद्धि और उसका जीवन गुणवता पर प्रभाव शेखावाटी प्रदेश का एक भौगोलिक विश्लेषण भी उल्लेखनीय है।

डॉ. रावत डी.एस. और कुमार सुशील (2008), डॉ. रावत डी.एस. और कुमार सुशील (2008) का ग्रामीण जनसंख्या में कुपोषण समस्या जिला चान्दौली की के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन किया।

बारोले (2008), इन्होंने अपने अध्ययन में जनसंख्या से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों कों शामिल किया है। इन्होंने अपना अध्ययन तहसील स्तर पर किया है। जिसमें भी जनसंख्या के सभी घटकों पर प्रकाश डाली है। बोरोले ने अध्ययन में शिरपुर के लिंग अनुपात के अस्थायी प्रतिरूप पर प्रकाश डाला है।

चौधरी आर. सी. (2009), इन्होंने अपनी पुस्तक ''जनसंख्या का भूगोल'' में जनसंख्या अध्ययन से सम्बन्धित समस्त तथ्यों या घटकों का एक व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया है। उन्होंने कहा कि जनसंख्या भूगोल के सभी पक्षों का अध्ययन या विश्लेषण सभी भूगोलवेत्ताओं द्वारा किया जाना आवश्यक है।

कदम अविनाश और सप्तश्री पी. जी. (1999), इन्होंने अपने अध्ययन में जनसंख्या अध्ययन के लिए विविध तकनीकों का प्रयोग करते हुए बारामती तहसील के जनसंख्या वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण किया है और कहा है कि वर्तमान में जनसंख्या के अध्ययन के लिए विद्वानों को विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए।

3. शोध का अध्ययन क्षेत्र

भिवानी जिले को 22 दिसम्बर 1972 को हिसार से अलग कर दिया गया था। इसके जिला मुख्यालय का नाम भी भिवानी ही है। जिला भिवानी हरियाणा राज्य के उतर मे $28^0 19^{|}$ और $29^0 5^{|}$ अक्षांश तथा पूर्व मे $75^0 28^{|}$ और $76^0 28^{|}$ रेखांश के मध्य में स्थित है। इसके उतर दिशा में हिसार दक्षिण में महेन्द्रगढ़ व राजस्थान का झुन्झुनूं जिला पूर्व मे रोहतक और पश्चिम मे राजस्थान का इस जिले मे सीमा पड़ती है। जो राज्य के क्षेत्रफल का 18.8 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह हरियाणा का सबसे बड़ा जिला हुआ करता था, परन्तु चरखी दादरी भिवानी से अलग होकर एक नया जिला बन गया जिसके कारण अब सिरसा जिला सबसे बड़ा जिला बन गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

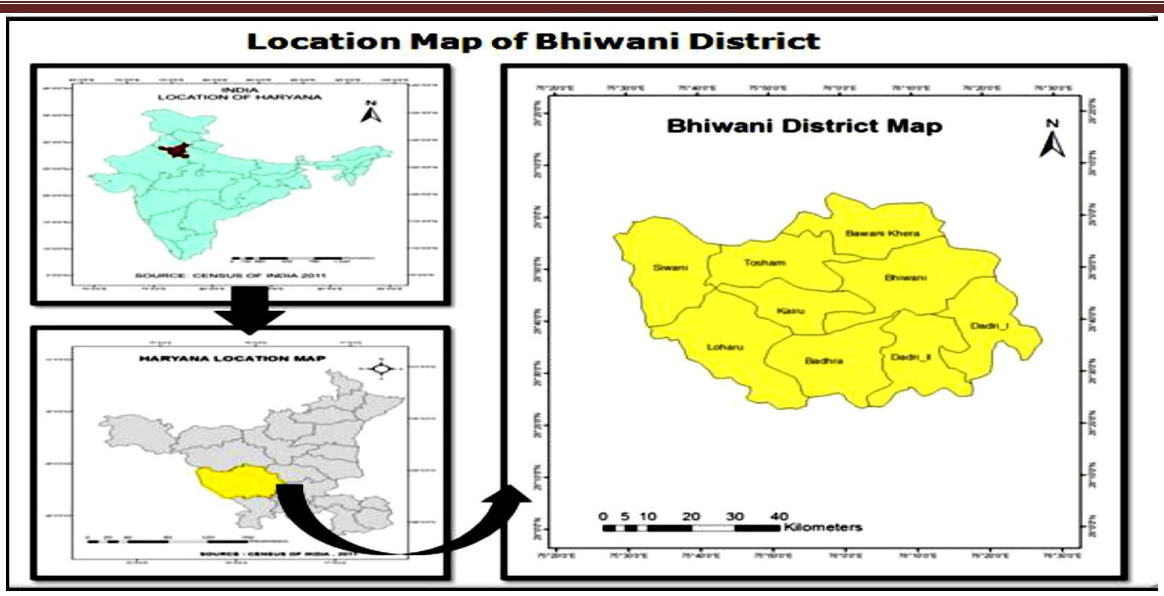

4. शोध के उद्देश्य

1. भिवानी जिले की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

2. प्रस्तुत शोध में भिवानी जिले की सन् 1981 से सन् 2022 तक की जनसंख्या एवं उसकी गत्यात्यमकता एवं गत्यात्मकता को प्रभावित करने वाले उत्तरदायी कारको का विश्लेषण किया जाएगा।

3. जनसंख्या से सबंधित विविध विशिष्टताओं तथा जिले में जनसंख्या वितरण का अध्ययन विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शित करने का प्रयास किया किया जाएगा, इसी के साथ जिले में जनसंख्या वृद्वि के कारण, जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण, प्रभाव तथा जनसंख्या वृद्धि के स्तर का विश्लेषण किया जाएगा। जनसंख्या वितरण और जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन इस शोध में किया जाएगा।

4. इस शोध के अन्तर्गत जिले की जनसंख्या के घनत्व, लिंगानुपात और साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारकों, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात और साक्षरता का वितरण तथा जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाएगा। जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात और साक्षरता का विश्लेषण किया जाएगा।

5. इस शोध में जिले की जनसंख्या के ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या वितरण और नगरीयकरण की प्रवृत्ति की विवेचना की जाएगी।

6. जनसंख्या का धार्मिक संगठन और विभिन्न आयु वर्ग के अनुसार जनसंख्या का अध्ययन किया जाएगा।

7. जिले की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन एंव विश्लेषण व विकास की उन्नति में जनसंख्या का प्रभाव भी इस शोध के उद्देश्यों में सम्मिलित है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना को बदलावों का अध्ययन किया जाएगा।

8. जनसंख्या वृद्धि से भूमि व अन्य संसाधन उपयोग में आए परिवर्तन का विश्लेषण किया जाएगा।

9. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन काना और निराकरण के सुझाव प्रदान किए जाएंगें। अतः इस शोध में जनसंख्या वृद्धि के नियोजन हेतु तात्कालिक व दूरगामी उपाय सुझाने का प्रयास किया जाएगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

5. शोध की परिकल्पनाएं

1. भिवानी जिले में सन् 1981 से सन् 2022 तक की जनसंख्या एवं उसकी गत्यात्यमकता में परिवर्तन आया है।
2. जिले की जनसंख्या वृद्धि से ग्रामीण व नगरीय संरचना, जनसंख्या वितरण और घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, नगरीकरण व अन्य जनांकिकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आार्थिक पक्ष से सम्बन्धित परिवर्तन देखे गए है।
3. वर्तमान समय में भिवानी जिले के मानव संसाधन में वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के तरीकों में बदलाव आया है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ना होकर शोषण हो रहा है।
4. इस शोध के अन्तर्गत जिले की जनसंख्या के घनत्व, लिंगानुपात और साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारकों, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात और साक्षरता का वितरण तथा जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाएगा।
5. जनसंख्या वृद्धि के कारण अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिकीकरण व नगरीयकरण हुआ है। जिसका प्रभाव अध्ययन क्षेत्र के कृषि प्रतिरूप व उत्पादन और मृदा की उत्पादन क्षमता पर देखा गया है।
6. जिले की जनसंख्या एवं पर्यावरण के मध्य अन्तर्सम्बन्धों में विशिष्ट प्रकार का बदलाव आया है।
7. भिवानी जिले में सन् 1981 से सन् 2022 तक की जनसंख्या में आए बदलाव ने इस क्षेत्र में जनसंख्या–संसाधन संतुलन को प्रभावित किया है।

6. शोध विधि तंत्र एवं आँकड़ों का स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ''भिवानी जिले की भौगोलिक स्थिति के कारण जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन (वर्ष 1981 से 2022 तक)'' के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के आँकड़ो का संकलन किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य जनसंख्या की अवधारणा, जनसंख्या वृद्धि व स्वरूप के व्यवहारिक व सैद्धांतिक पक्षों का अध्ययन करता है। शोध में पूर्व में विद्यमान सिद्धांतों को नवीन तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। यह शोध कार्य भिवानी जिले में जनसंख्या वृद्धि व उसकी विशेषताओं में आए बदलावों से हुए विभिन्न परिवर्तनों की समीक्षा करता है साथ ही इसके प्रभाव स्वरूप प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के बदलते स्वरूप का भी अध्ययन किया जाएगा।

1 प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति के द्वारा किया जायेगा।
2 शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दृष्टिकोणों को अपनाया जायेगा।
3 शोध क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आँकड़ों एवं द्वितीयक आँकड़ों को आधार बनाकर तथ्यों का संकलन, सारणीयन व वर्गीकरण के द्वारा संश्लेषण–विश्लेषण किया जायेगा।
4 शोध में सांख्यिकीय विधियाँ अपनायी जायेंगी।

7. शोध की महत्ता और उपयोगीता

भिवानी जिले के विकास में जनसंख्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। जनसंख्या वृद्धि का कृषि के विकास पर अत्यधिक प्रभाव पडता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ जल संसाधनों उपयोग में परिवर्तन आना स्वभाविक है। क्षेत्र की बढती जनसंख्या जीविकोपार्जन हेतु संसाधनों पर आश्रित रहती है, परिणामस्वरूप जल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 10, October- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संसाधन के उपयोग में परिवर्तन आता है, जो एक सतत् प्रक्रिया है। इस प्रकार जनसंख्या और जल संसाधन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध हैं। जनसंख्या में वृद्धि होने पर जल संकट दृष्टिगत होता है तकनीक तथा उपयोग परिवर्तन होता है, जिससे वह बढती हुई जनसंख्या के लिये जल, भोजन, वस्त्र एवं उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। जनसंख्या में वृद्धि होने पर जल संसाधनों का गहन उपयोग होने लगता है और तद्नुरूप तकनीकी में परिवर्तन होने लगता है प्रबन्ध व उत्पादन के रूप में कृषि से सम्बन्धित जनसंख्या उसके विकास का नियन्त्रक है।

अध्ययन क्षेत्र (भिवानी जिले) के लिए जनसंख्या उसके जीवन के रक्त के रूप में है इसलिए जनसंख्या के अध्ययन के बिना क्षेत्र के किसी भी तत्व का अध्ययन सम्पूर्ण नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध प्रबंध के विश्लेषण में जनसंख्या का बहुत अधिक महत्व है। क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उसके संसाधन उपयोग के दबाव को प्रभावित करती है यहीं कारण है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ भिवानी जिले के संसाधनों का दोहन भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र का जल व कृषि संकट बढ़ रहा है। पिछले 50 वर्षों में जिले में जनसंख्या का तेजी से विकास हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप कृषि भूमि संसाधन पर जनसंख्या का जबरदस्त दबाव पड़ा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य स्रोत है और यह अध्ययन क्षेत्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय है। जनसंख्या वृद्धि के साथ, अध्ययन क्षेत्र में भूमि का उपयोग बदल रहा है। मेंलेजिन के अनुसार, ''जनसंख्या अध्ययन जनसंख्या वितरण और इसके समूहों के मध्य उत्पादन संबंधी सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवासीय बस्तियों का जाल तथा उसकी उपयुक्तता को प्रभावित करता है।'' प्रस्तुत शोध कार्य हरियाणा राज्य के भिवानी जिले में जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक विश्लेषण के साथ ही नगरीयकरण के प्रभाव व उससे हुए सामाजिक, आर्थिक व भौगोलिक परिवर्तन से सम्बंधित है। शोध में जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ते नगरीयकरण तथा जनसंख्या के विभिन्न घटकों की परिवर्तन या उनके बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। जनसंख्या वृद्धि औद्योगिक व कृषि केंद्रों में आर्थिक गतिविधियों में बढोतरी का प्रतीक है। जनसंख्या वृद्धि व नगरीयकरण व्यवसायिक क्षेत्रों में वृद्धि के साथ–साथ सामाजिक गतिशीलता को भी बढ़ावा देता है। शोध में भिवानी जिले में जनसंख्या वृद्धि व उसकी समस्त विशेषताओं व नगरीयकरण से वहां भौगोलिक रूप से आए परिवर्तन जैसे कृषि योग्य भूमि का कम होना, गांव से शहरों की ओर पलायन और जिले में जनसंख्या दबाव का भी विश्लेषण किया गया है।

संदर्भ सूची :

* अग्रवाल, एस.एन.(1974) : भारत में जनसंख्या की समस्याऐं, टाटा एम हिल, नई दिल्ली।
* जाट, गुर्जर :– 'मानव भूगोल' पंचशील प्रकाशन, जयपुर
* भिवानी जिले की जनगणना रूपरेखा (2011) : जनगणना विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली ।
* भिवानी जिले का गजेटियर (1977) : गजेटियर निर्देशालय, हरियाणा ।
* भिवानी जिले की सांख्यिकीय रूपरेखा (2006–07, 2014–15 और 2017–18) : आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, हरियाणा ।
* स्टेटिस्टीकल एब्सटैक्ट :– आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, हरियाणा।